ॐ

सनातन संवर्धिनी

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब, (पंजी.) नई दिल्ली

भारत रत्न महामना पं. मदनमोहन मालवीय जी
संस्थापक

प्रथम वर्ष – अंक द्वितीय

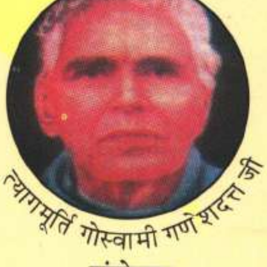
त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी
संयोजक

(कार्यक्षेत्रः दिल्ली, चण्डीगढ़, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, राजस्थान)
मुख्य कार्यालयः भूपेन्द्र भवन, कृष्णा मार्केट, पहाड़गंज, नई दिल्ली-55, दूरभाषः 011-23586251, 23584016
शाखा कार्यालयः गोस्वामी गणेशदत्त भवन, सैकटर-19 ए, मध्य मार्ग, चण्डीगढ़, दूरभाषः 0172-2543283
सप्तऋषि आश्रम, हरिद्वारः 01334-261702

E-mail: sdprsabha@gmail.com

संपादक मण्डल

संरक्षक

डॉ. शिवकुमार शर्मा

संपादक मण्डल

डॉ. नन्द किशोर शर्मा

प्रो. पी. के. भारद्वाज

डॉ. भारती बन्धु

डॉ. विजय शर्मा

परामर्श मण्डल

श्री इन्द्र मोहन गोस्वामी

श्री उपेन्द्र शर्मा

श्री सरदारी लाल गोस्वामी

डॉ. देश बन्धु

डॉ. राज पाल विज

पुरोवाक्

सनातन परिवार के सम्माननीय सदस्यजनों को विदित है कि सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब ने गत वर्ष 'सनातन संवर्धिनी' नामक अर्द्धवार्षिक पत्रिका के प्रकाशन का संकल्प लिया था। ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज की पुण्यतिथि 10 जून, 2015 के अवसर पर इस अर्द्धवार्षिक पत्रिका का प्रथम अंक प्रकाशित कर सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के सत्संकल्प को कार्यरूप दिया गया। 'सनातन संवर्धिनी' का यह द्वितीय अंक सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के संस्थापक महान शिक्षाविद् एवं समाज सेवी भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी की जयन्ती के शुभावसर पर 25 दिसम्बर, 2015 को प्रकाशित करते हुए सनातन परिवार अत्यंत हर्ष एवं गर्व का अनुभव कर रहा है। वस्तुतः 'सनातन संवर्धिनी' पत्रिका के माध्यम से सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब अपने संस्थापक भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी व संचालक त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज एवं इन जैसी अन्य दिव्य विभूतियों के संस्कृति-संरक्षण, धर्म-प्रचार, शिक्षा-विस्तार, राष्ट्र-निर्माण एवं समाज-कल्याण से सम्बद्ध विविध सेवा प्रकल्पों को कार्यान्वित करना चाहती है।

देश की भावी युवा पीढ़ी को सनातन मूल्यों, संस्कारों एवं परम्पराओं से अवगत कराते हुए उनमें सनातन धर्म के पोषण, परिवर्द्धन एवं संरक्षण के लिए प्रतिबद्धता पैदा करना इस पत्रिका का मूल उद्देश्य है। एतदर्थ इस पत्रिका में वेद, उपनिषद्, पुराण, रामायण, गीता, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र, आयुर्वेद आदि विविध शास्त्रों से सम्बद्ध ज्ञानवर्धक सामग्री और उसकी आधुनिक युग में प्रासंगिकता एवं उपयोगिता सम्बन्धी जानकारी दी जायेगी। इससे हमारे युवा सनातन धर्मियों को सनातन धर्म की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की महत्ता, वैज्ञानिकता और व्यावहारिकता का सहज ज्ञान हो सकेगा। इस पत्रिका में श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब एवं श्री सनातन धर्म महावीर दल पंजाब तथा श्री सनातन धर्म शिक्षा समिति के अन्तर्गत किए गए विभिन्न धार्मिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक समारोहों व आयोजनों की रिपोर्ट के साथ-साथ स्थानीय सनातन धर्म सभाओं, महावीर दल घटकों एवं स्कूल-कॉलेजों की महत्त्वपूर्ण गतिविधियों एवं विशिष्ट उपलब्धियों के समाचार एवं रिपोर्ट भी प्रकाशित किए जाएँगे।

प्रस्तुत अंक में भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी के सेवाधर्मी ओजस्वी व्यक्तित्व पर प्रमुखता से प्रकाश डाला गया है। साथ ही सनातन धर्म एवं संस्कृति के विश्व व्यापी मानवीय सेवा प्रकल्पों को रेखांकित करने वाले सारगर्भित लेखों के अतिरिक्त सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के 29 नवम्बर, 2015 को गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म कॉलेज, हरयाणा, होशियारपुर में सम्पन्न पंचवर्षीय अधिवेशन की संक्षिप्त रिपोर्ट भी प्रस्तुत है।

पत्रिका की सफलता एवं स्वायत्तता के लिए इसका आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर होना आवश्यक है। सम्पादक मण्डल का अनुरोध है कि प्रबुद्ध पाठक व्यक्तिगत स्तर पर सदस्यता ग्रहण कर आर्थिक सहयोग प्रदान करें। इसके साथ ही आप पत्रिका छपने हेतु अपनी सभा एवं संस्था की ओर से विज्ञापन देकर इस सारस्वत अनुष्ठान में अपनी आहुति दे सकते हैं। पत्रिका प्रकाशन में प्रतिनिधि सभा के प्रधान समादरणीय डॉ. शिव कुमार शर्मा, कार्यवाहक प्रधान श्री इन्द्रमोहन गोस्वामी, महासचिव श्री उपेन्द्र शर्मा, गोस्वामी सरदारी लाल, डॉ. देशबन्धु, अर्थ एवं कार्यालय मंत्री डॉ. आर.पी. विज के आशीर्वाद ने हमारा मार्गदर्शन किया है। एतदर्थ सम्पादक मंडल इनके प्रति आभार व्यक्त करता है।

विनीत

डॉ. नंद किशोर शर्मा

'भारत रत्न महामना पंडित मदन मोहन मालवीय' समाज सेवा को समर्पित एक ओजस्वी, तेजस्वी व्यक्तित्व

जी होता है मातृभूमि का तुम्हें अचल अनुराग कहूँ,
जी होता है परम तपस्वी का मैं तुमको त्याग कहूँ,
जी होता है प्राण फूंकने वाली तुमको आग कहूँ,
इस अभागिन भारत जननी का मैं तुमको सौभाग कहूँ।

महापुरुषों का जीवन चरित्र ऐसा दीपक होता है जिसके उजियारे से संसार का सारा अंधेरा मिट जाता है। जिसके सहारे से अंधेरी कोठरी में चांदना हो जाता है, डर भाग जाता है, चिन्ता मिट जाती है। मनुष्य ऊपर उठने लगता है इतना ऊपर कि कभी-कभी उसकी प्रगति को देखकर अचरज होने लगता है। एक जादू होता है महापुरूषों का जीवन-चरित्र पढ़ने और सुनने से। भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी का जीवन चरित्र हर तरह उत्साहित करने वाला, धर्म में रूचि पैदा करने वाला तथा विद्या व यश प्रदान करने वाला है। श्वेत पगड़ी, श्वेत चन्दन तिलक, श्वेत अंगरखा, श्वेत उत्तरीय, श्वेत पाजामा/धोती, श्वेत मौजे व जूते धारण किए हिमाच्छादित धवलगिरि के समान अडिग इस महान व्यक्तित्व ने भारत को स्वदेश प्रेम, स्वधर्म, भक्ति, जाति सेवा, ज्ञान, विचार आदि जलधाराओं से सींचा।

महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय का जन्म तीर्थराज प्रयाग में 25 दिसम्बर सन् 1861 को हुआ। अपने पितामह धर्मात्मा परम भगत प्रेमधर जी और पिता ब्रजनाथ की भगवद्‌भक्ति का अमर प्रसाद तथा उनके सम्पूर्ण गुणों को विरासत में पाया। माता श्रीमती मूनादेवी बड़ी सरल, कोमल एवं उदार हृदय थी जो हर घड़ी सेवा का अवसर ढूँढती थी। पण्डित ब्रजनाथ की पाँचवी सन्तान पं. मदन मोहन मालवीय जी की आरम्भिक शिक्षा घर पर ही संस्कृत और शिष्टाचार से प्रारम्भ हुई। बाद में प्रयाग में ही पण्डित हरदेव जी की धर्म ज्ञानोपदेश पाठशाला तथा पण्डित देवकी नन्दन जी की विद्याधर्म प्रवर्द्धिनी सभा की पाठशाला में शिक्षा ग्रहण की। प्रयाग में माघ के मेले में त्रिवेणी के संगम पर मात्र सात वर्ष की छोटी सी आयु में पहला व्याख्यान मोढे पर खड़े होकर दिया। नौ वर्ष की आयु में पिताजी ने बालक को बटुक बना दिया और प्रथम आचार्य बन सावित्री मंत्र दिया। कौपीन (लंगौटी) धारण करके हाथ में पलाश दण्ड लेकर कन्धे पर मृगछाला डालकर हाथ में झोली लेकर मदन मोहन मालवीय जी ने माता से जाकर कहा – 'भवति ! भिक्षां देहि'। उस समय कौन जानता था कि कौपीन उतार देने पर भी, मृगछाला और दण्ड फेंक देने पर भी एक दिन यही बटुक बहुत बड़ी झोली लेकर द्वार-द्वार, नगर-नगर सारे राष्ट्र के लिए भिक्षा मांगेगा और संसार का सबसे बड़ा 'दानी भिखारी' कहलाएगा। अव्वल दर्जे का शरारती, बड़ा खिलाड़ी चंचल प्रवृत्ति का यह बालक अपनी टोली का नेता था। मेलों व उत्सवों में सजावट तथा भीड़ का प्रबन्ध करने तथा सेवा करने में बचपन से ही सबसे आगे रहता था। संगीत से इनको बड़ा लगाव था। वास्तव में यह विद्या खानदानी थी। मधुर स्वर इन्हें विरासत में मिला था। अंग्रेजी सीखने की इच्छा भी मन में जागी जो पिता ने आर्थिक रूप से कमजोर होते हुए भी पूर्ण की, वे वहाँ भी अव्वल रहे। परन्तु अपनी मातृभाषा हिन्दी के उत्थान में आजीवन लगे रहे। अपने अनथक प्रयास से न्यायालयों में प्रचलित फारसी लिपि के साथ नागरी लिपि को भी स्वीकृत कराया।

संध्यावन्दन में इनकी विशेष रूचि थी। एक बार उन्हें गायत्री मंत्र जपने की धुन सवार हुई। ये अक्सर चुपचाप घर से भाग जाते और यमुना किनारे बरगद घाट पर एकासन लगाकर गायत्री मंत्र जपते थे। इनकी माता जी को भय हुआ कि कहीं यह लड़का साधु-फकीर न हो जाए, पर मदन मोहन मालवीय जी जैसा कर्मयोगी, सरस व उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने वाला युवक फकीर कैसे हो सकता था।

इण्टर की परीक्षा पास करने के बाद आर्थिक तंगी से जूझते हुए भी मदन मोहन मालवीय जी ने म्योर सैन्ट्रल सरकारी कॉलेज प्रयाग में दाखिला लिया। वहाँ के प्राचार्य प्रसिद्ध विद्वान श्री हरिसन थे। उन पर मदन मोहन जी के देशानुराग, पवित्र जीवन, धीरता व निर्भयता का बड़ा प्रभाव पड़ा। इस कॉलेज में मदन मोहन जी के गुणों का विकास तो हुआ ही साथ ही उन्हें संस्कृत के अध्यापक महामहोपाध्याय पण्डित आदित्य राम भट्टाचार्य जी जैसे आदर्श गुरू भी मिले जो उनके केवल कॉलेज के ही गुरू नहीं रह गए बल्कि वे उनके वास्तविक पथ प्रदर्शक गुरु बन गए। मदन मोहन मालवीय जी को महामना मदनमोहन मालवीय बनाने में उनका बहुत बड़ा हाथ है।

महामना का अर्थ है - वह मानव जो महान व उदात्त मन का हो। मदन मोहन मालवीय जी के नाम के आगे महामना उपाधि का प्रयोग मालवीय जी के व्यक्तित्व की उदारता और महानता को रेखांकित करता है। मालवीय जी क्षेत्रवाद और साम्प्रदायिक संकीर्णताओं से कोसों दूर थे। उनकी दृष्टि में समूचा विश्व एक परिवार है। अत: विश्व के प्राणी मात्र का कल्याण और उत्थान करना उनके जीवन का मूल लक्ष्य रहा और इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने सनातन संस्कृति और वैदिक मूल्यों को अपनाया।

सन् 1880 में प्रयाग में पण्डित आदित्य भट्टाचार्य जी के प्रयासों से हिन्दू समाज की स्थापना हुई। मदन मोहन मालवीय जी प्रधान कार्यकर्ताओं में से एक थे। 1884 में मदन मोहन मालवीय जी ने 'हिन्दू मध्यम समाज' नाम से प्रयाग में एक सभा स्थापित की जिसमें हिन्दू धर्म और समाज को सुसंगठित करने के अनेक उपायों पर गम्भीर विचार किया गया। सभा के 1891 तक प्रतिवर्ष महोत्सव होते रहे जिसमें लोककल्याण और देशहित के अनेक विषयों पर बहुत विचार विमर्श होता रहा। हिन्दू समाज के साथ-साथ मालवीय जी ने लिटरेरी संस्था की स्थापना की जिसका उद्देश्य समाज में राष्ट्रीय साहित्य का प्रचार करना था। वह 'हिन्दुस्तान' पत्र के सम्पादक भी रहे और उन्होंने वकालत भी की। परन्तु देश सेवा व हिन्दू धर्म के प्रचार-प्रसार की लगन ने उन्हें त्याग व सेवा की ओर मोड़ दिया।

सन् 1887 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयाग की स्थापना के बाद हिन्दू विद्यार्थियों के रहने की समस्या व उनके कष्ट को मालवीय जी ने अनुभव किया और उनके लिए एक आदर्श छात्रालय बनवाने का संकल्प लिया जो सन् 1906 में मैकडोनल, यूनिवर्सिटी हिन्दू बोर्डिंग हाउस' के नाम से उदारमना गवर्नर सर एण्टनी मैकडोनल के नाम पर बना जिसमें दौ सौ पचास हिन्दू विद्यार्थियों के रहने की व्यवस्था थी। यह प्रयाग के दर्शनीय भवनों में से एक था जिसे लोग मालवीय जी का बोर्डिंग हाऊस कहते थे। मिण्टों पार्क की स्थापना का सारा श्रेय भी मदन मोहन मालवीय जी को जाता है। जिसके लिए गोखले जी बहुत परेशान थे कि पल्ले में एक भी पैसा नहीं और मदन मोहन मालवीय जी ने उद्घाटन की तिथि भी निर्धारित कर दी। मालवीय जी ने कहा - 'मेरे पत्र ही रूपया ले आएंगे'। सचमुच उनकी चिट्ठियां ही एक लाख बत्तीस हजार आठ सौ सत्तावन रूपया ले आई। मालवीय जी का सपना था कि गंगा जी के

किनारे–किनारे प्रयाग से काशी तक ऐसे आश्रम बनें जिसमें लोग संयमपूर्वक रहकर अपना ज्ञान बढ़ावें और एक ऐसा विश्वविद्यालय बने जिसमें सब विद्याएं, सारे शिल्प शास्त्र विलायत की तरह पढ़ाए जाएं, हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों को विलायत न जाना पड़े। उनके साथी उस समय उनकी हँसी उड़ाते थे। परन्तु मालवीय जी ने अपने इस स्वप्न को साकार किया।

1906 में प्रयाग के कुम्भ के अवसर पर मालवीय जी ने 'सनातन धर्म' का विराट अधिवेशन कराया। उसी सम्मेलन में हिन्दू जाति तथा सनातन धर्म की रक्षा के लिए 'हिन्दू विश्व विद्यालय' स्थापित करने का प्रस्ताव महासभा में स्वीकृत हो गया। 1921 में जब सारा देश गांधी जी की आंधी में उड़ा जा रहा था उन्हीं तूफानी दिनों में मालवीय जी की सनातन धर्म सभा काम करने लगी। उन्होंने श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना की और सन् 1923 में गोस्वामी गणेशदत्त के हाथों उसकी बागडोर सौंपी। मालवीय जी का सनातन धर्म के प्रति विशेष लगाव था। उनका कहना था – पृथ्वी मण्डल पर जो वस्तु मुझको सबसे प्यारी है वह धर्म है, और वह धर्म, सनातन धर्म है।

हिन्दू विश्वविद्यालय काशी के लिए मालवीय जी ने झोली फैलाकर पैसा इकट्ठा किया। पूरे भारत ने एक करोड़ रूपये की दान राशि इन की झोली में डाल दी और मदन मोहन मालवीय को 'भिखारी सम्राट' की उपाधि दी। एक दीन ब्राह्मण की कल्पना सजीव हो गई। 4 फरवरी 1916 को 12 बजे बसन्त पंचमी के दिन काशी में विशेष समारोह हुआ जिसे हिन्दू विश्वविद्यालय का शिलारोपण महोत्सव कहा गया। इस विश्वविद्यालय के प्रथम चांसलर श्री सुन्दरलाल जी और प्रो. वाइस–चांसलर बने मदन मोहन मालवीय जी। तेरह सौ एकड़ जमीन पर फैले इस विश्वविद्यालय में महिला विद्यालय से लेकर आयुर्वैदिक कॉलेज, सैन्ट्रल हिन्दू कॉलेज में संस्कृत कॉलेज, वकालत का कॉलेज, विज्ञान का विद्यालय, कृषि अनुसंधान, इंजीनियरिंग कॉलेज, गायकवाड़ पुस्तकालय, हिन्दू विश्वविद्यालय का छापाखाना व अनेक छात्रावास तथा खेल के मैदान एवं व्यायाम विद्यालय हैं। न जाने कितने यात्री काशी आते हैं और हिन्दू विश्वविद्यालय को देखकर उसके निर्माता के बारे में सोचते हैं।

गोखले जी ने एक बार सच कहा था – त्याग किया है – मालवीय जी ने। गरीब घर में पैदा होकर वकालत की, धन कमाने लगे, अमीरी का मज़ा चखा। चखकर उसे देश के लिए ठुकरा दिया। त्याग है तो उनका।

कांग्रेस के इतिहास में भी मालवीय जी का अद्वितीय स्थान है। वे कांग्रेस के प्रभात काल में अरूण बनकर आए और धीरे धीरे वहां के प्रतापी सूर्य बन गए। उस समय देश को किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जो कांग्रेस को अपनी समझे और मन लगाकर इसके लिए काम करे। मालवीय जी ने कांग्रेस और देश के लिए अपना जीवन न्यौछावर कर दिया। नरम और गरम दोनों दलों में उनकी बात का प्रभाव था। तभी तो मालवीय जी ने देश के स्वतंत्रता संग्राम में भरपूर योगदान दिया। गोलमेज परिषद में भी उन्होंने गांधी जी के साथ भाग लिया। यह उनके लिए सबसे बड़ा त्याग था। मालवीय जी के लिए विलायत जाना दधीचि और शिवि के त्याग से कम महत्व नहीं रखता था। परन्तु देश प्रेम के लिए वह 29 अगस्त सन् 1931 को गांधी जी के साथ विलायत रवाना हो गए।

शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों से ओतप्रोत होकर इस महामना ने समाज तथा देश की अनमोल सेवा की। समाज से अनेक बुराइयों को दूर करने के सफल प्रयास किए। उन्होंने स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए

कहा "पुरुषों की शिक्षा से स्त्रियों की शिक्षा का प्रश्न अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे ही भारत की भावी संतान की माताएं हैं। उनकी शिक्षा के प्रभाव से ही भावी राजनीतिज्ञों, विद्वानों, तत्त्वज्ञानियों का जन्म होगा। उन्होंने बाल विवाह के कुपरिणामों की ओर भी ध्यान दिलाया। अछूतोद्धार की आवाज भी मालवीय जी की ओर से सबसे पहले आई और अछूतों के साथ अच्छा व्यवहार करने, उनके लिए मन्दिरों के कपाट खोलने और कुओं पर पानी भरने की अनुमति दिलाने में मालवीय जी का बड़ा सहयोग रहा। उन्होंने कहा "हमारे वेद पुकार-पुकार कर कहते हैं कि हमारी हिन्दू जाति के अन्दर की सब जातियां अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्व और शूद्र सब एक शरीर के अंग हैं, इसलिए हमको छोटी या बड़ी सब जातियों से प्रेम करना चाहिए। हिन्दुओं से मेरी यह प्रार्थना है कि यदि वे भाई मन्दिरों में देवदर्शन के लिए आना चाहें, तो उन्हें देवताओं का दर्शन करने दें। यदि वेद सभाओं में आएं तो उन्हें स्थान दें और सर्वसाधारण के कुएं से उन्हें जल भरने दें। उन्होंने हरिजनों को मंत्र दीक्षा का कार्य किया जिससे काशी के हरिजन यह समझने लगे कि हम हिन्दू हैं, हमें भी भगवान का नाम जपने का अधिकार है। हरिजनों के उद्धार के लिए वह स्वयं उनके मुहल्ले में गए और उन्हें सफाई से रहने का उपदेश दिया। फिर काशी के पंडित नाराज भी हुए परन्तु मालवीय जी ने उनकी परवाह नहीं की। वे हिन्दू-मुस्लिम एकता के पक्षधर थे। वे कहते थे – मैं जैसे हिन्दूओं का शुभ चाहता हूँ वैसे ही मुसलमानों का भी। कदाचित मुझ में शक्ति होती कि मैं अपना दिल व जिगर खोलकर अपने हिन्दू-मुसलमान भाइयों को दिखला सकता कि मैं इन दोनों का किस प्रकार एक समान हितैषी हूँ। मेरी परमात्मा से एकमात्र प्रार्थना है कि हम सब अंगों में बलवान हों और आपस में एक दूसरे के साथ प्रेम के सूत्र में बंधकर स्वराज्य प्राप्त करें।"

श्री मदनमोहन मालवीय जी की गौरवगाथा को कुछ पंक्तियों में बांधना असंभव है। उनके धर्म और शिक्षा के प्रचार, सामाजिक सुधारों में योगदान, स्वतन्त्रता संग्राम में सुदृढ़ भूमिका ये सब कार्य इतने विस्तृत हैं कि किसी एक व्यक्ति के कार्य लगते ही नहीं। इसका प्रमाण है कि उनके बाद इन सब कार्यों को संभालने के लिए सैंकड़ों लोगों को आगे आने पड़ा। जिस सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब की स्थापना उन्होंने की उसकी बागडोर उन्होंने गोस्वामी गणेशदत्त जी को सौंपी जो उन्हीं की तरह त्यागमूर्ति थे और उन्होंने सभा के माध्यम से मालवीय जी के कार्यों को आगे बढ़ाया और एक इतिहास बना गए। तभी तो राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा था – मैं तो मालवीय जी महाराज का पुजारी हूँ उनके विचारों से ऐक्य है। आज मालवीय जी के साथ देशभक्ति में कौन मुकाबला कर सकता है ? वे किसी से द्वेष नहीं करते। उनके हृदय में विशाल शत्रु भी समा सकते हैं।

– डॉ० (श्रीमती) विजय शर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
सनातन धर्म कॉलेज (लाहौर)
अम्बाला छावनी

सनातन संस्कृति का विश्वव्यापी स्वरूप

किसी भी राष्ट्र की पहचान उस राष्ट्र की संस्कृति से होती है। संस्कृति राष्ट्र की चेतना है, ऊर्जा है, राष्ट्र के लिए संजीवनी है। संस्कृतिविहीन राष्ट्र ठूंठा वृक्ष है। आधुनिक भारत के राष्ट्रीय परिदृश्य में भारतीयता के ढूंढने का उपक्रम भारत के अपार अगाध सांस्कृतिक रिक्थ में गोता लगाने से ही पूर्ण हो सकता है। क्योंकि भारतीय संस्कृति ही भारतीय अस्मिता की परिचायक है –

यूनान मिश्र रोमां सब मिट गए जहाँ से
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।।

हमारी हस्ती के अक्षय और अक्षुण्ण बने रहने का कारण हमारी सुदृढ़ संस्कृति है। शताब्दियों की दासता के उपरान्त भी भारत स्वतन्त्र हुआ। इसका एकमात्र कारण हमारे स्वतन्त्रता सेनानियों की धमनियों में बहने वाली वह सांस्कृतिक चेतना ही रही है जिसने उन्हें मातृभूमि की बलिवेदी पर स्वयं को आहूत करने को प्रेरित किया। भारतीय संस्कृति के अभेद्य कवच से ही हम समय-समय पर विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमणों और विदेशी संस्कृतियों के आघातों का सामना करते हुए अपने अतीत के गौरव को, अपने आर्यत्व को सुरक्षित रख पाए हैं।

सम् उपसर्गपूर्वक 'कृञ्' धातु से क्तिन प्रत्यय लगने पर संस्कृति शब्द निष्पन्न हुआ है। संस्कृति सुसंस्कृत होने या करने की सतत् प्रक्रिया का नाम है। संस्कृति संस्कारों के पुंज से बनती है। इसे हम 'संस्कारों की समष्टि' भी कह सकते हैं। जैसे स्थूल देह की शुद्धि के लिए स्नान की आवश्यकता है वैसे ही मन, बुद्धि और आत्मा की शुद्धि के लिए संस्कारों की आवश्यकता है।

सनातन संस्कृति में इन संस्कारों का अत्यधिक महत्त्व है। सनातन धर्म संस्कार प्रधान धर्म है। यहाँ गर्भाधान, नामकरण, अन्नप्राशन, मुण्डन, उपनयन, परिणय आदि सोलह प्रमुख संस्कारों की प्रक्रिया से गुजरता हुआ व्यक्ति निरन्तर सुसंस्कृत होता जाता है। इस धर्म में तो मृत्यु को भी एक संस्कार माना गया है। यह किसी भी मानव का अन्तिम संस्कार है जिसे अन्त्येष्टि संस्कार कहते हैं। अन्त्येष्टि (अन्त्य+इष्टि) का अर्थ है अन्तिम यज्ञ। इस प्रकार इस धर्म में चेतनाहीन मानव देह को अग्नि देव को समर्पित करना एक इष्टि (यज्ञ) माना गया है। अन्तिम संस्कार वह संस्कार है जिसे मृतक के आत्मीय जन करते हैं। इस ऊर्ध्वदैहिक संस्कार से प्रदूषित वातावरण एवं परिवार का परिवेश शुद्ध होता है और बिछुड़ी जीवात्मा की प्रेतपद से मुक्ति हो कर उसे 'पितरभाव' की प्राप्ति होती है। ऐसी महान है हमारी संस्कृति।

मानव-मन की सद्‌वृत्तियों के निर्बाध और नैरन्तर्य प्रवाह से संस्कारों का निर्माण होता है। संस्कार-सृजन के लिए अभ्यास और धैर्य की आवश्यकता है। जैसे रस्सी के बार-बार आने-जाने से शिला पर निशान अंकित हो जाता है वैसे ही किसी सत्कर्म और सद्‌वृत्ति के पुनः पुनः व्यवहार से उसका संस्कार व्यवहर्ता के मन में समाहित हो जाता है और बाद में तदनुकूल व तदनुरूप आचरण करना उस व्यक्ति का सहज धर्म बन जाता है। संस्कार मानव-मन की अपार और अक्षय पूंजी है जो इस जन्म के बाद जन्मान्तर में भी व्यक्ति के जीवन का संचालन व नियन्त्रण करती है। सांसारिक सम्पदा की गठरी बांधकर कोई परलोक नहीं जाता, पर संस्कार जीवात्मा के साथ जाते हैं और महाप्रलय-पर्यन्त या कैवल्य-प्राप्ति तक उसका मार्गदर्शन करते हैं क्योंकि संस्कार जीव के धर्म हैं और धर्म को धर्मी से पृथक् नहीं किया जा सकता। दुग्ध में धवलता, मधु में मिठास व पुष्प में सुगन्ध की भाँति संस्कार व्यक्ति की अन्तश्चेतना में समाहित रहते हैं। संस्कृति संस्कारों की जननी है, संवाहिका और संयोजिका है।

भारतीय संस्कृति विश्व की महानतम और प्राचीनतम संस्कृति है। वैदिक वाङ्मय भारतीय संस्कृति का मूल

उत्स है। यह संस्कृति अनादि काल से अनवरतरूपेण प्रवहमान है। इसका अपना अनादि और अनन्त इतिहास है। शताब्दियों और सहस्राब्दियों की तो बात ही क्या ! यह संस्कृति स्वयं में युगों, मन्वन्तरों और कल्पों के इतिहास को समेटे हुए है। इसलिए इस संस्कृति को वैदिक संस्कृति या सनातन संस्कृति भी कह देते हैं। भारतीय संस्कृति मानव-मूल्यों की सुदढ़ नींव पर आधृत है। संस्कृति ने इन मूल्यों को बचाया है, बनाया है और मूल्यों ने संस्कृति का निर्माण किया है। यह परस्पर आदान-प्रदान का उपक्रम निरन्तर चलायमान है।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, बाहरी और आन्तरिक शुचिता, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, भगवत् स्मरण, मधु, प्रिय और सत्य-संभाषण, सर्वेषामविरोधेन जीवन-यापन, न्यायनिष्ठा, दानशीलता, त्यागवृत्ति, क्षमादान, परोपकार, दया, करुणा, सेवा-शुश्रूषा, सादा जीवन उच्च विचार, आदि और इन जैसी न जाने कितनी मानव-मन की सद्वृत्तियाँ भारतीय संस्कृति के प्राणतत्त्व हैं। इस प्रकार यह संस्कृति मानवतावादी उदात्त भावों और मूल्यों पर आधृत है। इस कारण यह विराट् रूप में वैश्विक और सार्वभौमिक संस्कृति के स्वरूप को ग्रहण कर लेती है। इस महान और विराट् संस्कृति में असंख्य लोक संस्कृतियों का अद्भुत अपूर्व संगम है। यही कारण है कि इस संस्कृति में अभेदता में भेदता और भेदता में अभेदता का मणि-कांचन संयोग दृष्टिगोचर होता है।

हमारे सांस्कृतिक मूल्य हमें चेतना के ऊर्ध्व सोपानों पर चढ़ाते हैं। भारतीय संस्कृति मानव-मात्र को असत् से सत्, अन्धकार से प्रकाश और मृत्यु से अमरता की ओर जाने हेतु प्रेरित करती है। इस संस्कृति के मूल में विश्वबन्धुत्व का भाव निहित है। यह उदात्त भाव इस संस्कृति को सार्वभौम और वैश्विक बना देता है। पाश्चात्य दृष्टि से विश्व एक बाजार है पर भारतीय दृष्टि में विश्व एक परिवार है - बृहत् और विराट् परिवार। तभी तो ऋषियों ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उद्घोष किया।

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

उन्होंने विश्व के नर-नारियों को उपदेश दिया कि वे परस्पर मित्रतापूर्ण दृष्टि से व्यवहार करें -

'मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्'

इसी मैत्रीभाव के वशीभूत हो सनातन ऋषि जन-जन के जीवन की मंगलकामना करता हुआ गा उठता है -

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

- श्रीमती रीना शर्मा
प्राध्यापिका
सनातन धर्म वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
अम्बाला छावनी

सनातन धर्म में समाजसेवा के विविध प्रकल्प

सनातन शब्द की व्याकरणशास्त्रीय व्युत्पत्ति पर विचार किया जाये तो यह शब्द 'सना' अव्यय से 'ट्यु' प्रत्यय (= अन आदेश) के योग और 'तुट्' (= त्) के आगम से निष्पन्न हुआ है। इस प्रकार सनातन शब्द का अर्थ है – सदा से प्रचलित, स्थायी, अनादि, नित्य। इस आधार पर सनातन धर्म वह धर्म है, जो अनादि है और मानवता के उदय के साथ ही प्रवर्तित हुआ है। ईसाई, मुस्लिम आदि धर्म तो इस धर्म से परवर्ती समानान्तर प्रचलित पृथक् धाराएं हैं। जैन, बौद्ध और सिख धर्म इसी सनातन धर्म की शाखाएं ही हैं।

सनातन धर्म में समाजसेवा को बहुत उच्च स्थान प्राप्त है। शास्त्रों में इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विविध प्रकल्पों को संचालित करने का परामर्श दिया गया है। ऋग्वेदीय सूक्तों से लेकर धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों तक समाजकल्याण के इन प्रकल्पों को दानविधि के रूप में विवृत किया गया है। धर्माचार्यों ने दानप्रशस्ति के माध्यम से दानवीरों को इन प्रकल्पों की संयोजना के लिये प्रकारान्तर से प्रेरित किया है। छान्दोग्योपनिषद् में 'त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययनं दानमिति' ऐसा निर्देश देकर दान को धर्म का अन्यतम अंग कहा गया है। महाभारत के अनुशासनपर्व में भीष्म ने युधिष्ठिर को अहिंसापालन, सत्यवचन, क्रोधपरित्याग और दान को मानवजीवन का स्थायी धर्म बतलाया है। महाभारत में पद-पद पर यह उल्लेख प्राप्त होता है कि मनुष्य जैसा दान करता है, वैसी ही भोग सामग्री प्राप्त करता है। दान देकर ही मनुष्य असीम कीर्ति का पात्र बनता है। अतएव धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों में भूमि, जूते, दीप, वस्त्र, शयन, अन्न, जल, पुस्तक आदि दैनिक प्रयोग की वस्तुओं के दान की भी प्रेरणा दी गई है।

वैदिक मन्त्रों और उपनिषद् वचनों के साथ-साथ अग्निपुराण, मत्स्यपुराण, वराहपुराण आदि ग्रन्थों में भी प्रसंगत: दानमहिमा वर्णित है। धर्मशास्त्रीय साहित्य में तो दानविधि पर विशेष प्रकरण और विशेष ग्रन्थों का भी प्रणयन किया गया है, जिनमें हेमाद्रिकृत चतुर्वर्गचिन्तामणि का दानखण्ड, गोविन्दानन्दकृत दानक्रियाकौमुदी, नीलकण्ठकृत दानमयूख, विद्यापतिकृत दानवाक्यावलि, बल्लालसेनकृत दानसागर तथा मित्रमिश्रकृत दानप्रकाश प्रमुख हैं। धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों में दानविधि के प्रकल्पों को दो श्रेणियों में विभक्त किया गया है – इष्ट और पूर्त। श्रुतिसम्मत यज्ञ, योग आदि अनुष्ठान इष्ट कहे जाते हैं और स्मृतिसम्मत वापी, कूप, तडाग आदि जनसेवा के प्रकल्पों की व्यवस्था करना पूर्त कहलाता है। पूर्त कार्यों के अन्तर्गत व्यवस्थापित प्रकल्प उत्सर्गश्रेणी में परिगणित होते हैं। इस श्रेणी के प्रकल्प सामान्य जनसेवा में समर्पित होते हैं। उनका दाता भी सामान्य जनता के सदस्य की भाँति ही उनका उपयोग कर सकता है। उसका उन पर स्वामित्व नहीं रहता।

प्रस्तुत लेख का कलेवर महाभारतसंहिता के अनुशासनपर्व की विषयवस्तु से सम्बद्ध बिन्दुओं तक ही सीमित रहेगा, क्योंकि भारतीय संस्कृति और सभ्यता का विश्वकोष कही जाने वाली महाभारत संहिता में धर्मशास्त्रीय मान्यताएं पिण्डीभूत स्वरूप में सन्निहित हैं।

वापी कूप, तड़ाग बनवाना :-

जल की प्राप्ति सभी जीवों और वनस्पतियों के लिये प्रथम आवश्यकता है। युधिष्ठिर द्वारा प्रश्न किये जाने पर भीष्म का ''पानीयस्य दानेन कीर्तिर्भवति शाश्वती'' यह वचन जलदान की महिमा को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है। युधिष्ठिर के समक्ष भीष्म ने अत्रिप्रोक्त जलदान की महिमा को उद्धृत करते हुए यह निर्देश दिया है कि जलदान श्रेष्ठ दान है, अत: मनुष्य को चाहिए कि वह जनसेवा के लिए कुएं, बावड़ी और तड़ाग खुदवाए। तदनुसार जनता को समर्पित अच्छे जल वाला और सुव्यवस्थित कुआँ मनुष्य की आधी बुराइयों को नष्ट कर देता है। जलाशय-निर्माण पर

बल देते हुए कहा गया है कि जिस मनुष्य के सरोवर में गाएँ, ब्राह्मण और साधु-महात्मा सदा जल पीते हैं, वह अपने सारे खानदान को पार लगा देता है।

पानीयं परमं दानं दानानां मनुरब्रवीत्।
तस्मात् कूपांश्च वापीश्च तड़ागानि च खानयेत्।।
अर्धं पापस्य हरति पुरुषस्येह कर्मणः।
कूपः प्रवृत्तपानीयः सुप्रवृत्तश्च नित्यशः।।
सर्वं तारयते वंशं यस्य खाते जलाशये।
गावः पिबन्ति विप्राश्च साधवश्च नराः सदा।। *म०भा०अनु० 65.3-5*

एक अन्य प्रसंग में भीष्म का कथन है कि सरोवर खुदवाने वाला मनुष्य तीनों लोकों में पूजित होता है, क्योंकि देव, मनुष्य, गन्धर्व, पितर, उरग, राक्षस और सभी प्रकार के स्थावर प्राणी (वृक्ष आदि) सरोवर पर ही आश्रित हैं। महाभारत के अनुसार जिसके सरोवर में वर्षभर पानी रहता है, वह विभिन्न प्रकार के व्ययसाध्य महायज्ञों का फल प्राप्त कर लेता है। यम और ब्राह्मण के संवाद में यम का वचन उद्धृत करते हुए भीष्म आदेश देते हैं कि दान के रूप में मनुष्य को पोखर, तड़ाग, कूप आदि खुदवाने चाहिएं और प्याऊ (प्रपा) आदि की सुव्यवस्था करनी चाहिए।

अन्नक्षेत्रों और भण्डारों का संचालन :-

अन्नदान की प्रवृत्ति वैदिक सूक्तों में भी वर्णित है। ऋग्वेद के षष्ठ मण्डल के 53वें सूक्त में ऋषि भरद्वाज ने पूषा देव से यह प्रार्थना की है कि वे समाज के समर्थ लोगों को अन्नदान के लिये अनुकूलित करें। छान्दोग्योपनिषद् (4. 1-2) से विदित होता है कि जानश्रुति पौत्रायण नामक नरेश ने जगह-जगह ऐसे अन्नक्षेत्र संचालित किये थे जिनमें बुभुक्षितों और भोजनार्थियों को निरन्तर भोजन वितरित किया जाता था। जानश्रुति के ये अन्नक्षेत्र इतने विख्यात थे कि उसके राज्य की सीमा में आकाशमार्ग से जाने वाले हंस आदि पक्षी भी उस राजा का गुणानुवाद करते थे। तैत्तिरीयोपनिषद् की द्वितीय वल्ली के द्वितीय अनुवाक में अन्न को जीवन का आधार कह कर अन्न की महिमा वर्णित की है।

महाभारत में युधिष्ठिर को उपदेश देते समय भीष्म ने कहा कि अन्नदान से सभी इच्छाओं की पूर्ति हो जाने के कारण पितर तृप्त हो जाते हैं। सभी देव और ऋषि भी अन्नदान की ही प्रशंसा करते हैं क्योंकि अन्न पर ही सारी दुनियादारी और सभी विद्याएं प्रतिष्ठित हैं। भीष्म आगे कहते हैं कि अन्न के सेवन से ही सभी प्राणियों का जीवन संचालित होता है। इसलिये अन्नदान के समकक्ष कोई दान नहीं है।

अन्नमेव प्रशंसन्ति देवा ऋषिगणास्तथा।
लोकतन्त्रं हि संज्ञाश्च सर्वमन्ने प्रतिष्ठितम्।। *म. भा. अनु. 63.5*
अन्नेन सदृशं दानं न भूतं न भविष्यति।।
अन्नाद् भवन्ति प्राणाः।। *म. भा. अनु. 63.6, 8*

भीष्म आदेश देते हैं कि गृहस्थी को चाहिए कि वह रास्ते में चलकर थके हुए, बूढ़े, घर पर आए हुए सत्पात्र को अन्न (भोजन) देकर सम्मानित करे। जो गृहस्थी राह चलते यात्री को, पीड़ित और अपरिचित मनुष्य को बिना दुःखी हुए (प्रसन्नतापूर्वक) अन्न (भोजन) देता है, वह अत्यन्त पुण्य प्राप्त करता है। भीष्म का यह कथन उल्लेखनीय है कि अन्नक्षेत्र में भोजन देते समय किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए। भीष्म दृष्टान्त देकर कहते हैं कि जिस प्रकार किसान अच्छी फसल के लिये अच्छी वृष्टि की आशा लगाए रहते हैं, उसी प्रकार पितरभी यह आशा लगाए रहते

हैं कि हमारा पुत्र अथवा पौत्र भी सत्पात्रों को भोजन कराएगा। भीष्म का यह कथन है कि अन्नदान करने वाला मनुष्य पशुधन से समृद्ध, पुत्रवान्, धनवान् और सर्वविध भोगसामग्री का पात्र बनता है। वर्तमान में तीर्थस्थानों पर संचालित अन्नक्षेत्र और स्थान-स्थान पर आयोजित भण्डारे सनातन धर्म की इसी प्राचीन शास्त्रीय परम्परा के संवाहक कहे जा सकते हैं।

विद्यालय खुलवाना :-

धर्मशास्त्रों में विद्यादान का भी महत्त्व वर्णित है। महाभारत के अनुशासनपर्व में उमा और महेश्वर के संवाद में महेश्वर का कथन है कि सत्पात्र को विद्या देने वाले मनुष्य को अगले जन्म में असाधारण मेधा, ज्ञानवृद्धि, धृति और स्मृति की प्राप्ति होती है।

विद्यादानं तथा देवि पात्रभूताय वै ददत्।
प्रेत्यभावे लभेन्मर्त्यो मेधां वृद्धिं धृतिं स्मृतिम्।।
दापनं त्वथ विद्यानां दरिद्रेभ्योऽर्थवेतनैः।
स्वयंदत्तेन तुल्यं स्यादिति विद्धि शुभानने।। म०भा०अनु०परिशिष्ट 3354-55

यदि कोई मनुष्य स्वयं विद्या देने में असमर्थ हो तो वह विद्वानों को वेतन देकर गरीबों के लिये विद्याप्राप्ति की व्यवस्था करवा सकता है और विद्यालय संचालित कर सकता है। यह व्यवस्था भी स्वयं विद्या देने के बराबर ही है।

आजकल अनेक दानवीर अपने संसाधनों से विद्यालय संचालित करके निःशुल्क विद्यादान का महान् कार्य कर रहे हैं, जो सनातन धर्म की शास्त्रीय परम्परा का सम्मान है। सनातन धर्म शिक्षा समिति इस दिशा में प्रशंसनीय कार्य कर रही है।

अस्पताल खुलवाना :-

महाभारत के अनुशासनपर्व में रोगियों की चिकित्सा करने का भी पुण्य निरूपित किया गया है। तदनुसार जो दयालु मनुष्य व्याधिग्रस्त प्राणियों के लिये दवाइयों का प्रबन्ध करता है, वह सदा नीरोग रह कर दीर्घ आयु प्राप्त करता है।

औषधानां प्रदाता च सततं कृपयान्वितः।
भवेद् व्याधिहीनश्च दीर्घायुश्च विशेषतः।। म०भा०अनु०, परिशिष्ट 3405

इस प्रकार प्राचीनकाल में जनसेवा के प्रकल्पों में चिकित्सा व्यवस्था भी अन्यतम प्रकल्प थी।

अनाथालय खुलवाना :-

महाभारत में अनाथ बालकों और असहाय व्यक्तियों के भरण-पोषण का उपदेश है। तदनुसार जो व्यक्ति अनाथ बच्चों, आर्थिक रूप से कमजोर मनुष्यों तथा दृष्टिहीन और पंगु व्यक्तियों का भरण-पोषण करता है, वह शीघ्र ही कठिनाइयों से छुटकारा पा लेता है।

मन्दिर, गोशाला और आश्रम बनवाना :-

धर्मशास्त्रीय ग्रन्थों में समाजकल्याण के विभिन्न कार्यों में मन्दिर व गोशाला संचालित करने और साधु-सन्तों के लिये आश्रम व मठ बनवाने का भी परामर्श है। इस प्रकार के प्रकल्प संचालित करने वाला मनुष्य देह त्यागने के बाद शुभ गति को प्राप्त होता है।

देवगोष्ठ्यः सभाः शाला भिक्षूणां च प्रतिश्रयम्।
यः कुर्याल्लभते नित्यं नरः प्रेत्य फलं शुभम्।। म०भा०अनु० परिशिष्ट 3407

गोशाला संचालित करने के विषय में निर्देश है कि देश और जलवायु के अनुसार गोशालाएं विविध आकार की हो सकती हैं और उनमें गायों के लिये गुणकारी स्वास्थ्यवर्द्धक चारे की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

बाग-बगीचे और वृक्ष लगाना :-

वानिकी परियोजनाएं पर्यावरण संरक्षण का प्रमुख आधार हैं। इस दृष्टि से धर्मशास्त्रियों ने बाग-बगीचे और पेड़ लगाने की प्रेरणा दी है। महाभारत के अनुशासन पर्व में वृक्षरोपण का उपदेश देते समय वट, पीपल आदि वृक्षों, कुश, दर्भ आदि गुल्मों, वृक्ष पर चढ़ने वाली पुष्पलताओं, भूमि पर प्रसृत होने वाली कद्दू आदि बेलों, बाँस, केला आदि त्वक्सार तथा घास आदि तृण जातियों का उल्लेख करके मुख्यतया वृक्ष लगाने का परामर्श दिया गया है। भीष्म कहते हैं कि वृक्षों के रोपने से मनुष्य की इस लोक में ख्याति होती है और परलोक में सुख मिलता है। मरने के बाद भी वृक्षों के बल पर मनुष्य का नाम इस लोक में जीवित रहता है। भीष्म का कथन है कि वृक्षरोपण करने वाला मनुष्य अतीत और अनागत-इन दोनों वंशों को पार लगा देता है।

अतीतानागते चोभे पितृवंशे च भारत।
तारयेद् वृक्षरोपी च तस्माद् वृक्षाँश्च रोपयेत्।।
तस्य पुत्रा भवन्त्येते पादपा नात्र संशयः।
परलोकगतः स्वर्गलोकाँश्चाप्नोति सोऽव्ययान्।।
पुष्पैः सुरगणान् वृक्षाः फलैश्चापि तथा पितृन्।
छायया चातिथिं तात पूजयन्ति महीरुहः।। म०भा० अनु० 58, 26-28

इस प्रसंग में भीष्म का यह कथन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है कि ये वृक्ष तो वृक्षरोपण करने वाले मनुष्य के पुत्र ही हैं, जिनके कारण वह परम सुखद लोकों को प्राप्त करता है, क्योंकि ये वृक्ष पुष्पों से देवसमुदाय की, फलों से पूर्वजों की और छाया से अतिथिजनों की सेवा करते हैं। किन्नर, उरग, राक्षस, देव, गन्धर्व, मानव और ऋषिगण - ये सभी वृक्षों पर ही आश्रित हैं। इसलिए सरोवर के किनारे अच्छे वृक्ष लगाने चाहिएं और पुत्रवत् उनकी पालना करनी चाहिए। पुराणों में पीपल, वट, बिल्व, तुलसी आदि वनस्पतियों को देवतुल्य माना गया है।

उपसंहार :-

इस प्रकार हमारे ऋषियों और प्राचीन आचार्यों ने जनकल्याण के प्रकल्पों के संचालन को ईश्वरीय कोटि में रखकर और धार्मिकता से जोड़कर सद्गृहस्थियों को इनके प्रवर्तन की पुण्यमूलक प्रेरणा दी थी। एक ओर जीवन की मूलभूत आवश्यकता - अन्न और जल की उपलब्धि को सुनिश्चित करने के लिये अन्नक्षेत्रों के संचालन और वापी, कूप, तड़ाग आदि खुदवाने की महिमा वर्णित की, वहीं दूसरी ओर स्वास्थ्यसंरक्षण के साथ-साथ विद्यादान को भी पुण्यदायी कहा गया है। समाज के गरीब और असहाय वर्ग के उत्थान के लिये गृहस्थियों को अनाथालय खोलने के लिये प्रेरित किया गया है। अर्थव्यवस्था के प्रमुख स्रोत गोधन के संरक्षण और असहाय पशुओं की देखरेख के लिये गोशाला खुलवाने का महत्त्व बतलाया गया और पक्षान्तर में पर्यावरण संरक्षण के लिये परमोपयोगी एवं खाद्यसामग्री के आधारभूत वृक्षों के रोपण के माध्यम से सामाजिक वानिकी का प्रवर्तन किया। निःसन्देह, सनातन धर्म के शास्त्रीय ग्रन्थों में उपदिष्ट समाजसेवा के ये प्रकल्प आज और भी अधिक प्रासंगिक हैं।

डॉ० श्रीकृष्ण शर्मा
प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा का पंचवर्षीय अधिवेशन

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब पंजीकृत का पंचवर्षीय अधिवेशन दिनांक 29 नवम्बर, 2015 को गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म कॉलेज, हरयाणा, होशियारपुर में आयोजित हुआ। प्रात: 11.00 बजे कॉलेज प्रांगण में प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. शिव कुमार शर्मा जी ने ब्रह्मलीन त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी की प्रतिमा का अनावरण किया। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. गुरदीप शर्मा ने विभिन्न प्रदेशों से आए हुए जनप्रतिनिधियों का स्वागत किया। प्रचार मन्त्री डॉ. नन्द किशोर शर्मा ने प्रतिनिधि सभा एवं अन्य संस्थाओं के कार्यकलापों की पंचवर्षीय रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस अवसर पर कॉलेज के छात्र-छात्राओं ने सरस्वती वन्दना के साथ-साथ भक्ति संगीत का मनोरम कार्यक्रम प्रस्तुत किया। चुनाव प्रक्रिया के अन्तर्गत डॉ. आर.पी. विज जी को चुनाव अधिकारी तथा श्री गुरुदत्त शर्मा जी को सह चुनाव अधिकारी एवं श्री सुधीर गुप्ता जी को पर्यवेक्षक नियुक्त किया गया। इस अधिवेशन में डॉ. शिवकुमार शर्मा जी को एक बार पुन: सर्वसम्मति से प्रधान पद के लिए निर्वाचित किया गया तथा सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर उन्हें अन्य पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी आदि के गठन के लिए अधिकृत किया गया। इस अधिवेशन में सर्वसम्मति से निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किये गये –

श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब पंजीकृत गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय हरयाणा, होशियारपुर, पंजाब में दिनांक 29 नवम्बर, 2015 को आयोजित अपने पंचवर्षीय अधिवेशन में सम्मिलित पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, जम्मू-काश्मीर, चण्डीगढ़, दिल्ली, उत्तराखण्ड, राजस्थान आदि प्रदेशों की सनातन धर्म सभाओं, महावीरदल घटकों, शिक्षा संस्थाओं के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित कर इन प्रस्तावों को भारत सरकार तथा सम्बन्धित प्रदेशों की सरकारों को प्रस्तावों के कार्यान्वयन हेतु उन्हें प्रेषित कर रही है :-

1. सनातन धर्म एवं संस्कृति में गौ को माता के तुल्य सम्मान दिया गया है। गौ जन्मदात्री माँ की भाँति व्यक्ति का पालन-पोषण करती है। उसका सम्पूर्ण जीवन मानवजाति के उपकार के लिए समर्पित होता है। तभी तो 'गऊ' को गौमाता कहा जाता है। हमारे ऋषि-मुनियों ने कभी सोचा भी न होगा कि धर्मप्राण भारत जैसे देश में गौ हत्या जैसा जघन्य पाप किया जाएगा। हिन्दु धर्म की मान्यताओं और आदर्शों पर आघात करने वाले कुछ तथाकथित स्वार्थी लोग सनातन धर्म की धुरी कही जाने वाली गौ माता की नृशंस हत्या करते हैं। श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार से निवेदन करती है कि देश में गौ हत्या जैसे जघन्य पाप पर पूर्ण प्रतिबन्ध हो और ऐसा पापाचार करने वाले व्यक्ति को मृत्यु दण्ड का प्रावधान हो।
2. सनातन परिवार के लिए यह गर्व एवं हर्ष का विषय है कि हरियाणा सरकार ने गौ-हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाकर जन-जन की भावना के अनुरूप प्रशंसनीय कार्य किया है। एतदर्थ श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर माननीय मुख्यमन्त्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी एवं हरियाणा सरकार का हार्दिक धन्यवाद करती है।
3. कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है। कश्मीर की सम्पूर्णता के लिए और राष्ट्र की सम्प्रभुता के लिए यह आवश्यक है कि भारत सरकार और जम्मू-कश्मीर की सरकार कश्मीर के विस्थापित पण्डितों के पुनर्वास के लिए हर सम्भव प्रयास करे। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब सर्व सम्मति से प्रस्ताव पारित कर भारत

सरकार से निवेदन करती है कि कश्मीर के विस्थापित पंडितों को पुन: स्थापित होने के लिए आर्थिक पैकेज देने के साथ-साथ उन्हें यह भी विश्वास दिलाए कि वे सभी अपने-अपने नगर और गांव में पुनर्वास करने पर पूर्णत: सुरक्षित रहेंगे।

4. श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार से निवेदन करती है कि वह पाकिस्तान में स्थित हिन्दुओं के पवित्र तीर्थ स्थल 'कटास राज' तथा अन्य मन्दिरों एवं धार्मिक स्थलों की सुरक्षा सुनिश्चित करे एवं इनका जीर्णोद्धार करे। पाकिस्तान सरकार यह सुनिश्चित करे कि इन धार्मिक स्थलों पर नित्य प्रति सनातन धर्म की पूजा-पद्धति के अनुसार पूजा-अर्चना की जाये। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब इस सन्दर्भ में हर सम्भव सहयोग प्रदान कर सकती है।

5. पाकिस्तान व बंगलादेश आदि देशों में हिन्दुओं की नित्य प्रति घट रही आबादी पर श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब गहरी चिन्ता व्यक्त करती है। हिन्दुओं के प्रति पाकिस्तान सरकार की घोर उपेक्षा तथा पाकिस्तानी कट्टरपंथियों द्वारा उत्पीडन, अत्याचार एवं तिरस्कार के कारण हिन्दुओं का वहां से पलायन हो रहा है। विभाजन के समय पाकिस्तान में 18 प्रतिशत हिन्दुओं का वर्तमान में मात्र 2 प्रतिशत से भी कम रह जाना हम सनातन धर्मियों के लिए गहरी चिन्ता का विषय है। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करती है कि भारत सरकार हिन्दुओं के हितों की रक्षा के लिए और उन पर हो रहे अमानवीय अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के लिए पाकिस्तान सरकार पर अंतर्राष्ट्रीय दबाव डाले और मानवाधिकारों के हनन के परिप्रेक्ष्य में संयुक्त राष्ट्र संघ में इस विषय को गम्भीरता से उठाए।

6. श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर भारत सरकार से निवेदन करती है कि अमेरिका, कनाडा, यु.के., फ्रांस आदि अनेक देशों में सनातन धर्म एवं संस्कृति में विश्वास रखने वाले वहाँ के निवासी भारतीयों द्वारा पूजा-अर्चना के लिये बनाये गये मन्दिरों, गुरुद्वारों एवं अन्य धार्मिक स्थलों की सुरक्षा एवं पवित्रता बनाये रखने के लिये भारत सरकार वहाँ की सरकारों पर अपना द्विपक्षीय एवं बहुपक्षीय दबाव बनाये ताकि कोई भी असामाजिक एवं अमानवीय तत्त्व इन पूजा स्थलों को किसी प्रकार की क्षति न पहुँचा सके।

7. सनातन धर्म बहुत उदार, विराट और समन्वयवादी धर्म है। इस धर्म का किसी अन्य धर्म से किसी भी प्रकार का कोई विरोध नहीं है। सनातन धर्म सर्वधर्म समभाव, साम्प्रदायिक सद्भाव, सामाजिक समरसता एवं समानता के सिद्धांत को स्वीकार करता है। यह धर्म ''सर्वे भवन्तु सुखिन:'' तथा ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के मूलभाव को समूचे विश्व में प्रसारित कर रहा है। सनातन धर्म की दृष्टि में सभी धर्मों की आत्मा एक है। अत: धर्म के नाम पर धार्मिक विद्वेष एवं सामाजिक वैमनस्य फैलाने वाले व्यक्ति का और उसके हर प्रकार के अमानवीय कृत्य एवं व्यवहार का सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब विरोध करती है और सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर सभी धर्मानुयायियों से यह अपेक्षा करती है कि वे मन, कर्म और वचन से किसी भी अन्य धर्म को क्षति न पहुँचाएँ बल्कि सभी धर्मों के धार्मिक ग्रन्थों, पूजा-स्थलों, पूजा-पद्धतियों एवं उनके पुरोधा संत-साधकों का पूर्ण सम्मान करते हुए विश्व एकता का परिचय दें।

8. सनातन धर्म, आर्य समाज, जैन, सिक्ख आदि धर्मों से सम्बद्ध अनेक सामाजिक शिक्षण संस्थाएं - स्कूल एवं कॉलेज हरियाणा एवं पंजाब प्रदेश में निस्वार्थ भाव से शिक्षा के प्रचार-प्रसार में समर्पित हैं तथा विद्यार्थियों

को संस्कारी और अच्छी शिक्षा प्रदान कर रही हैं। परन्तु पंजाब एवं हरियाणा सरकारों ने शिक्षा विस्तार और सेवाधर्म को समर्पित इन सामाजिक शिक्षण संस्थाओं पर प्रॉपर्टी टैक्स लगाकर जन विरोधी व शिक्षा विरोधी कार्य किया है। ये संस्थाएं इन धर्मों के तपस्वी, मनस्वी सन्तों, महापुरुषों और शिक्षा शास्त्रियों द्वारा स्थापित तथा दानवीरों द्वारा पोषित समूचे राष्ट्र, समाज और प्रदेश की शैक्षणिक विरासत हैं। ये संस्थाएं लाभ कमाने वाले व्यावसायिक प्रतिष्ठान नहीं है। अत: सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर निवेदन करती है कि पंजाब सरकार एवं हरियाणा सरकार इन शिक्षा संस्थाओं पर लगाया गया सम्पत्ति कर समाप्त करे।

9. बैजनाथ, हिमाचल प्रदेश में श्री सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब के संयोजक महान शिक्षा विद् एवं भारत रत्न महामना मदन मोहन मालवीय जी के एकमात्र दीक्षित शिष्य त्यागमूर्ति गोस्वामी गणेशदत्त जी महाराज की पुण्य स्मृति में **गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म महाविद्यालय बैजनाथ** नामक कॉलेज की स्थापना की गई थी। बाद में हिमाचल प्रदेश की सरकार ने इस कॉलेज को अपने मूल स्वरूप में अधिग्रहीत कर लिया और इसका नाम रखा – **''गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, बैजनाथ'' (GGD SD Govt. College, Baijnath)** पर अब गोस्वामी जी की पुण्य स्मृति में स्थापित उक्त संस्था का नाम बदल कर पं. संतराम राजकीय कॉलेज, बैजनाथ कर दिया गया है जो पूर्णत: नीति, न्याय और जनभावना के विरुद्ध है। इससे गोस्वामी जी के हजारों शिष्यों एवं सनातन धर्मियों की भावना आहत हुई है। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर हिमाचल प्रदेश की सरकार सें निवेदन करती है कि बैजनाथ स्थित सम्बद्ध रांजकीय महाविद्यालय का नाम पुन: ''गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय बैजनाथ'' किया जाए।

10. सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करती है कि पंजाब सरकार व केन्द्र सरकार जाति, धर्म, लिंग, क्षेत्र आदि किसी भी प्रकार के भेदभाव के बिना सन् 1984 में और उसके बाद आतंकवाद में मारे गए हिन्दुओं के आश्रितों को भी उसी प्रकार उचित मुआवजा दें जैसे 1984 के दंगा पीड़ित सिक्ख भाइयों को दिया गया है।

11. भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है। इस संस्कृति को वैदिक संस्कृति या सनातन संस्कृति के नाम से पुकारा जाता है। संस्कृत और हिन्दी दोनों ही भारतीय संस्कृति की संवाहिका भाषाएं हैं। भारत के स्वतन्त्रता सेनानियों और स्वतन्त्रता के पश्चात् संविधान निर्माताओं ने इस तथ्य को भली प्रकार से स्वीकार किया। तभी तो हिन्दी को राष्ट्र भाषा के साथ-साथ राज भाषा के सम्माननीय पद से अलंकृत किया गया। पर व्यवहार में अब भी पूरी तरह से अंग्रेजी और अंग्रेजियत का बोलबाला है। प्रशासनिक, न्यायालय सम्बन्धी, तकनीकी एवं औद्योगिक आदि क्षेत्रों में हिन्दी और संस्कृत की घोर उपेक्षा हो रही है। इससे हमारी संस्कृति को महान खतरा पैदा हो गया है। सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा पंजाब पंजीकृत सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित करती है कि भारत सरकार एवं राज्य सरकारें हिन्दी और संस्कृत के उत्थान, विकास और संरक्षण के लिए उचित से उचित कदम उठाएँ। अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त की जाए। स्कूलों और कॉलेजों में इनके पठन-पाठन के लिए अंग्रेजी के समान पीरियड दिये जाएं। स्कूलों में संस्कृत के विकल्प के रूप में शरीर विज्ञान का विषय न दिया जाए और इन दोनों भाषाओं को विधि, तकनीकी और औद्योगिक संस्थानों में शिक्षा का माध्यम बनाकर इन्हें रोजगार-परक बनाया जाए।

डॉ. नन्द किशोर शर्मा, प्रचार मन्त्री

S.S.D. Sabha, Bathinda

Great generous & dedicated philanthropist conceived an idea to establish S.S.D. Sabha in the domain of Bathinda in the year 1923 and sensing the necessity got it registered on 14.03.1957 as one of the religious charitable institution to preach and cultivate the "Sanatanist Values" and "Secularism" and for promotion of education among people and also to spread the message translated in Vedas, Surtis, Samrities, Geeta, Puran and to spread the preaching of Param Hans Swami Vivekanand & other great philosophers. With the grace of Almighty and the blessings & participation of the general public, S.S.D. Sabha remained on ladder of glory by its hard work in the propagation of the principles of Sanatan Dharma and to promote the cause of education among masses.

S.S.D. Sabha is running S.S.D. Group of Girls' Colleges, four Senior Secondary Schools at Bathinda, Senior Secondary CBSE School at Village Bhokhra (Bathinda) and one S.S.D. Sada Ram Public School at Village Bhokhra (Bathinda). In the year 2015, S.S.D. Sabha feeling the necessity of a Playway School for Kids opened S.S.D. Bal Gopal Playway School in the mid of the City (Gali Hathi Wala Mandir) with all ultra modern facilities with wi-fi technology. For the promotion of the Sanatanists value, the Sabha is running three Mandirs i.e. S.S.D. Sabha Mandir, S.S.D. Shiv Mandir & a Shani Mandir. In the year 2014, S.S.D. Sabha installed the murti of Lord Ganesha within Hathi Wala Mandir.

A rascinating look has been given to Hathi Wala Mandir by lot of renovation in the beginning of year 2015 itself & Sabha is indebted to the members who took keen interest in all this.

S.S.D. Sabha has been regularly celebrating Deepawali, Lohri, Shivratri, Ram Navmi and has been regularly organizing Havans & Bhandaras in its Mandir, beside organizing Bhagwat Katha, Ram Katha, Akhand Path of Guru Granth Sahib by Preachers & Saints. Sabha has been organizing Yatras to re-enlighten the spiritual fire in hearts and souls of people with the sole aim to glorify the Sanatan Dharma.

Recently in the year 2015, newly elected team took up the work of renovation of ancient and famous Shiv Mandir, Mehna Chowk, Bathinda and decorated the "Shivling & Prikarma" with 11 Kg. Silver with the help of great donors without putting any burden on Sabha whereas Sabha contributed only Rs. 74,600/- as labor charges.

Sh. Abhey Singla Adv.
President

Sh. K.K. Aggarwal
Vice-President

Sh. Ramesh Goyal
Gen. Secretary

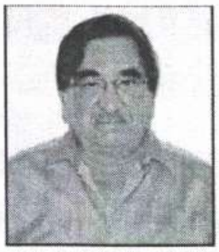

Sh. Subhash Gupta
Finance Secretary

Sh. J.P. Goyal
Administration Secretary

दिनांक 29 नवम्बर 2015 को गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म कालेज, हरयाणा, होशियारपुर में आयोजित पंचवर्षीय अधिवेशन की झलकियाँ

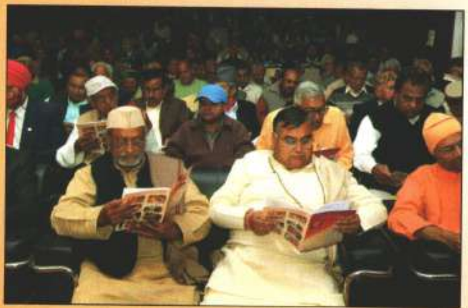

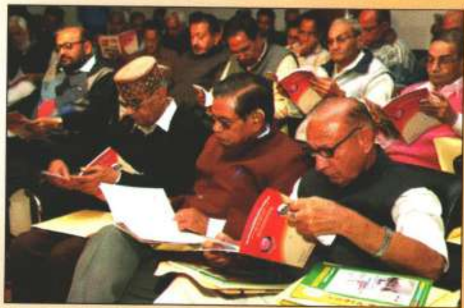

दिनांक 29 नवम्बर 2015 को गोस्वामी गणेशदत्त सनातन धर्म कालेज,
हरयाणा, होशियारपुर में आयोजित पंचवर्षीय अधिवेशन की झलकियाँ